

KOMKOMKOMKOMKOMKOMKOM

## नवमः पाठः

### विमानयानं रचयाम्

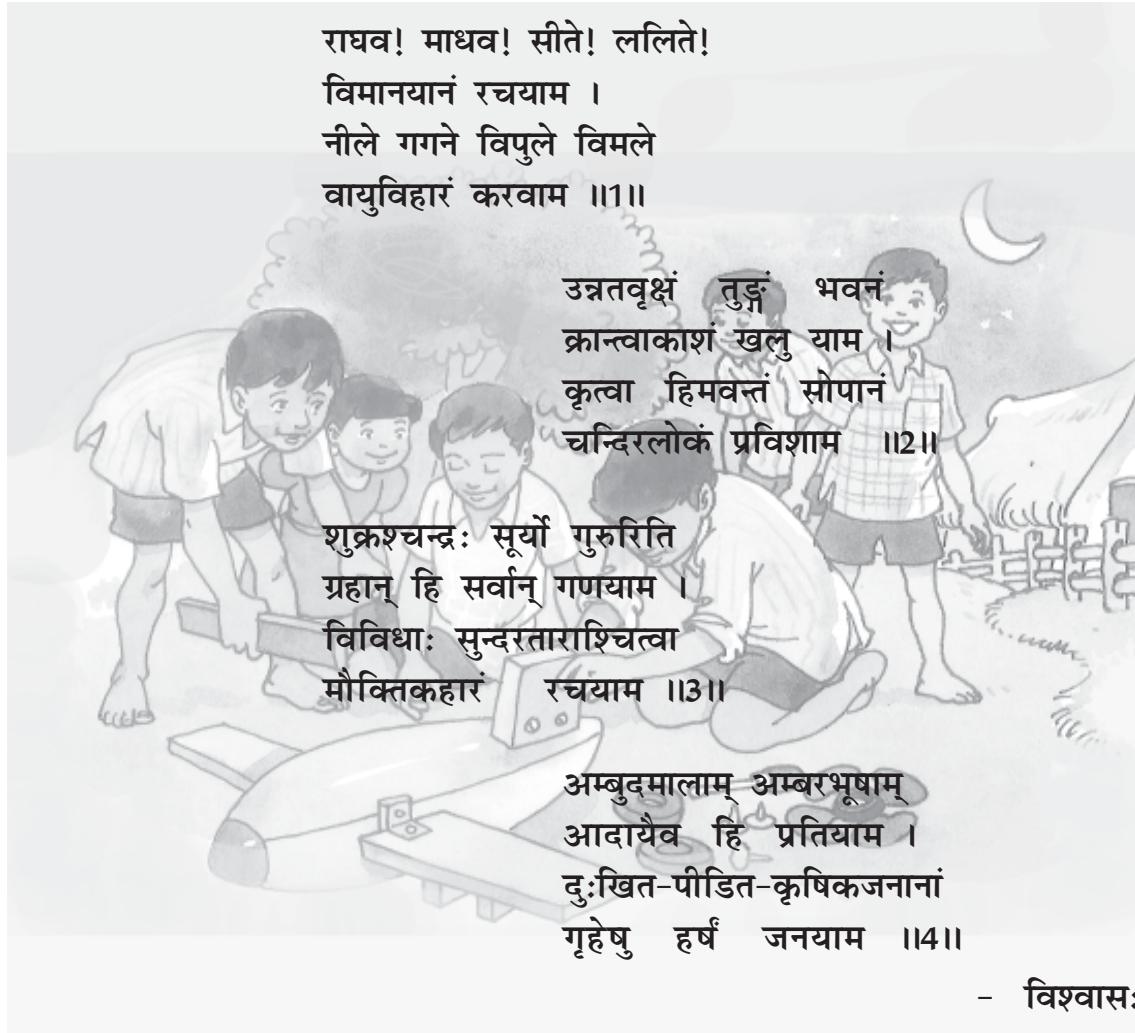
राघव! माधव! सीते! ललिते!  
विमानयानं रचयाम ।  
नीले गगने विपुले विमले  
वायुविहारं करवाम ॥१॥

उन्नतवृक्षं तुङ्गं भवनं  
क्रान्त्वाकाशं खलु याम ।  
कृत्वा हिमवन्तं सोपानं  
चन्द्रिरलोकं प्रविशाम ॥२॥

शुक्रश्चन्द्रः सूर्यो गुरुरिति  
ग्रहान् हि सर्वान् गणयाम ।  
विविधाः सुन्दरताराश्चित्वा  
मौक्तिकहारं रचयाम ॥३॥

अम्बुदमालाम् अम्बरभूषाम्  
आदायैव हि प्रतियाम ।  
दुःखित-पीडित-कृषिकजनानां  
गृहेषु हर्षं जनयाम ॥४॥

- विश्वासः





रुचिरा - द्वितीयो भागः

### शब्दार्थः

|                  |   |                              |
|------------------|---|------------------------------|
| विमानयानम्       | - | हवाई जहाज                    |
| रचयाम्           | - | (हम) बनाएँ                   |
| विपुले           | - | विस्तृत (आकाश) में           |
| विमले            | - | निर्मल (आकाश) में            |
| वायुविहारम्      | - | वायुयात्रा (आकाश में यात्रा) |
| करवाम्           | - | (हम) करें                    |
| उन्नतवृक्षम्     | - | ऊँचे वृक्ष को                |
| तुङ्गम्          | - | ऊँचा                         |
| क्रान्त्वा       | - | पार करके                     |
| याम्             | - | (हम) चलें                    |
| हिमवन्तं सोपानम् | - | बर्फ की सीढ़ी को             |
| चन्द्रिरलोकम्    | - | चन्द्रलोक को                 |
| प्रविशाम्        | - | (हम) प्रवेश करें             |
| गणयाम्           | - | (हम) गिनें                   |
| चित्वा           | - | चुनकर                        |
| मौकितकहारम्      | - | मोतियों के हार को            |
| अम्बुदमालाम्     | - | बादलों की माला को            |
| अम्बरभूषाम्      | - | आकाश की शोभा को              |
| आदाय             | - | लेकर                         |
| प्रतियाम्        | - | (हम) लौटें                   |
| जनयाम्           | - | (हम) उत्पन्न करें            |



## अभ्यासः



1. पाठे दत्तं गीतं सस्वरं गायत-
2. कोष्ठकान्तर्गतेषु शब्देषु तृतीया-विभक्तिं योजयित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-  
यथा- नभः चन्द्रेण शोभते। (चन्द्र)
  - (क) सा ..... जलेन मुखं प्रक्षालयति। (विमल)
  - (ख) राघवः ..... विहरति। (विमानयान)
  - (ग) कण्ठः ..... शोभते। (मौक्तिकहार)
  - (घ) नभः ..... प्रकाशते। (सूर्य)
  - (ङ) पर्वतशिखरम् ..... आकर्षकं दृश्यते। (अम्बुदमाला)
3. भिन्नवर्गस्य पदं चिनुत- भिन्नवर्गः  
यथा- सूर्यः, चन्द्रः, अम्बुदः, शुक्रः। अम्बुदः
  - (क) पत्राणि, पुष्पाणि, फलानि, मित्राणि। .....
  - (ख) जलचरः, खेचरः, भूचरः, निशाचरः। .....
  - (ग) गावः, सिंहाः, कच्छपाः, गजाः। .....
  - (घ) मयूराः, चटकाः, शुकाः, मण्डूकाः। .....
  - (ङ) पुस्तकालयः, श्यामपट्टः, प्राचार्यः, सौचिकः। .....
  - (च) लेखनी, पुस्तिका, अध्यापिका, अजा। .....
4. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-  
 (क) के वायुयानं रचयन्ति?  
 (ख) वायुयानं कीदृशं वृक्षं कीदृशं भवनं च क्रान्त्वा उपरि गच्छति?  
 (ग) वयं कीदृशं सोपानं रचयाम?  
 (घ) वयं कस्मिन् लोके प्रविशाम?  
 (ङ) आकाशे काः चित्वा मौक्तिकहारं रचयाम?  
 (च) केषां गृहेषु हर्षं जनयाम?





## 5. विलोमपदानि योजयत-

|         |            |
|---------|------------|
| उन्नतः  | पृथिव्याम् |
| गगने    | असुन्दरः   |
| सुन्दरः | अवनतः      |
| चित्वा  | शोकः       |
| दुःखी   | विकीर्य    |
| हर्षः   | सुखी       |

## 6. समुचितैः पदैः रिक्तस्थानानि पूरयत-

| विभक्तिः | एकवचनम्    | द्विवचनम् | बहुवचनम् |
|----------|------------|-----------|----------|
| प्रथमा   | भानुः      | भानू      | .....    |
| द्वितीया | .....      | .....     | गुरुन्   |
| तृतीया   | .....      | पशुभ्याम् | .....    |
| चतुर्थी  | साधवे      | .....     | .....    |
| पञ्चमी   | वटोः       | .....     | .....    |
| षष्ठी    | .....      | विभ्वोः   | .....    |
| सप्तमी   | शिशौ       | .....     | .....    |
| सम्बोधन  | हे विष्णो! | .....     | .....    |

## 7. पर्याय-पदानि योजयत-

|         |         |
|---------|---------|
| गगने    | जलदः    |
| विमले   | निशाकरः |
| चन्द्रः | आकाशे   |
| सूर्यः  | निर्मले |
| अम्बुदः | दिवाकरः |